रक्षा बंधन संस्कार

सामग्री - अक्षत (चावल), कुंकुम, मोली, राखी, गुड़, जल कलश, बाजोट, मंगलभावना पत्रक, थाल, लाल कपड़ा आदि ।

विधि

- नमस्कार महामंत्र का समुच्चारण करें ।
- बाजोट पर लाल वस्त्र विछाकर स्वस्तिक बनायें । थाल के मध्य कुंकुम से **स्वस्तिक** या **अर्हम** का अंकन करें

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ।।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम् ।।

- समूहबद्ध होकर मंगलभावना करते हुए बाजोट पर अथवा अन्य उपयुक्त स्थान पर मंगलभावना पत्रक की स्थापना करें ।

श्री सम्पन्नोऽहं स्याम्	ह्री सम्पन्नोऽहं स्याम्	धी सम्पन्नोऽहं स्याम्
धृति सम्पन्नोऽहं स्याम्	शक्ति सम्पन्नोऽहं स्याम्	शान्ति सम्पन्नोऽहं स्याम्
नंदि सम्पन्नोऽहं स्याम्	तेजः सम्पन्नोऽहं स्याम्	शुक्ल सम्पन्नोऽहं स्याम्

- मंगल मंत्रोच्चार के साथ बहन अपने भाई-भाभी व भतीजा-भतीजी के मस्तक पर तिलक लगाये, दाहिने हाथ पर रक्षा सूत्र (मोली) बांधे, गुड़ से मुँह मीठा कराये ।

धम्मो मंगल मुक्किठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
संती संतिकरे लोए, पत्तो गइ मणुत्तरं।।

- समूहबद्ध होकर **लोगस्स** का पाठ करें -

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउव्वीसंपि केवली।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे।।

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।
कुंथं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।
कित्तिय-वंदिय-महए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।

• जीवन में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की अभिवृद्धि हो, इस शुभ भावना के साथ निम्न मंत्रोच्चार करें -

नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तहेव य ।
खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ।।

• मंगल पाठ से कार्यक्रम सम्पन्न करें

चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा , केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।
चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरहंते सरणं पवज्जामि,
सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।।

• **विशेष**

- इस मंगल अवसर पर बड़ों के पैर छूकर प्रणाम किया जाए ।
- घर में बड़े शुभ आशीर्वाद प्रदान कर वात्सल्य की वर्षा करें।
- लाड़ली बहन, बहनोई, भाणजा, भाणी को सम्मान, प्यार और दुलार से वर्धापित करके मंगल भविष्य की कामना की जाए ।